INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान SI

उपनिरीक्षक / प्लाटून कमांडर

भाग - 2

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/c37ssj

Online Order करें - https://shorturl.at/mpOV7

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का इतिहास	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नबंर
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	17
3.	ऐतिहासिक (केंद्र)	25
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	30
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली	84
6.	स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	98
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	104
8.	राजस्थान का एकीकरण	109
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	113
10.	प्रजामण्डल आंदोलन	122
	कला संस्कृति	
1.	वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ • किले और स्मारक (छतरियाँ) • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ • प्रमुख महल	134
2.	चित्रकला	154
3.	हस्त कला / हस्तशिल्प	163
4.	राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	172

5.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	179
6.	वेशभूषा एवं आभूषण	183
7.	मेले एवं त्यौहार	186
8.	राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	198
9.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	205
10.	राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं	219
11.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	224
12.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	233
13.	महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल	243
14.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	245

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्‌भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्‌भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्‌भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्‌भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।

- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं :-

2. कालीबंगा की सभ्यता :-

- कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी**।
- इसे **दृषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।
- यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज :-

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रुप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।
- (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना। इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।

- यहाँ से **मुग़ल काल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर **बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, **हिरण तथा वनस्पति** का चित्रण प्राप्त होता है ।

5. **गणेश्वर (सीकर):**

- **सीकर जिले से** स्थान से कुछ दूरी पर स्थित गणेश्वर नामक स्थान से उत्खनन में **ताम्र युगीन** उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थान काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- गणेश्वर को **पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता** माना जाता है।
- गणेश्वर सभ्यता 2800 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।
- गणेश्वर को **"पुरातत्व का पुष्कर"** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **ताँबे का बाण** एवं **मछली पकड़ने का कांटा** प्राप्त हुआ है ।
- इन उपकरणों में तीर, भाले, सूइयां, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल है ।
- गणेश्वर को भारत में '**ताम्र युगीन सभ्यताओं की 'जननी'** कहा जाता है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **रत्न चंद्र अग्रवाल** द्वारा 1977 में तथा विस्तृत उत्खनन 1978-79 में **विजय कुमार द्वारा** करवाया गया ।
- गणेश्वर से उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है उन्हें **कपिषवर्णी मृदपात्र** कहते हैं।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **काले एवं नीले रंग** से अलंकृत मृदपात्र मिले हैं।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के बाँध बनाने के प्रमाण मिले हैं ।
- गणेश्वर में **ईंटों** के उपयाग के **प्रमाण नहीं** मिले हैं ।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं।
- गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से **दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्र पिन** भी प्राप्त हुई है ।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग गाय, बैल, बकरी, सुअर, कुत्ता, गधा आदि पालते थे ।
- गणेश्वर सभ्यता को **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है ।

6. **गिलूण्ड (राजसमंद) :-**

- यह ताम्र युगीन सभ्यता **राजसमंद जिले में बनास नदी के तट** पर स्थित है।
- **मोडियामगरी'** नामक टीले का संबंध गिलूण्ड सभ्यता से है।
- **वर्ष 1957-58 में बी. बी. लाल द्वारा** यहाँ पर **उत्खनन कार्य** करवाया गया।
- यहाँ पर **पक्की ईंटों के** प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ पर उत्खनन से **ताम्र युगीन सभ्यता** एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ पर आहड़ सभ्यता का प्रसार था तथा इसी के समय यहाँ मृद्भाण्ड, मिट्टी की पशु आकृतियां आदि के चित्र मिले हैं।
- गिलूण्ड के मृद्भाण्डों पर **ज्यामितीय चित्रांकन** के अलावा **प्राकृतिक चित्रांकन** भी किया गया है।
- गिलूण्ड में उच्च स्तरीय जमाव में क्रीम रंग एवं काले रंग से चित्रित पात्रों पर चिकतेदार हिरण प्रकाश में आए हैं।
- गिलूण्ड में लाल एवं काले रंग के **मृद्भाण्ड** मिले हैं।

7. **रंगमहल (हनुमानगढ़) :-**

- रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास स्थित है ।
- यह **एक ताम्र युगीन सभ्यता** है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **डॉ. हन्नारिड** के निर्देशन में **स्वीडिश दल द्वारा 1952-54 ई.** में किया गया ।
- ये मृद्भाण्ड चाक से बने होते थे तथा ये पतले तथा चिकने होते थे ।
- यहाँ से कुषाण कालीन तथा उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई है जिनमें कुछ **पंचमार्क मुद्राएँ** भी हैं ।
- यहाँ से **ब्राह्मी लिपि** में नाम अंकित **दो कांसे** की सीलें भी प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से उत्खनन में **डॉ. हन्नारिड** को प्राप्त मिट्टी का **कटोरा स्वीडन के लूण्ड** संग्रहालय में सुरक्षित है।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण **ईंटों से** होता था ।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्भाण्ड मुख्यत : लाल या गुलाबी रंग** के थे ।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण मूर्तियाँ, टोंटीदार घड़े, घण्टाकार मृदपात्र एवं **कनिष्क कालीन मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं ।
- रंग महल से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
- इसे **कुषाण कालीन सभ्यता** के समान माना जाता है ।
- रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं ।

8. **ओझियाना (ब्यावर) :**

- **ब्यावर के बदनोर** के पास **खारी नदी** के तट पर स्थित यह स्थल ताम्र युगीन **आहड़ संस्कृति** से संबंधित है ।
- इस स्थल का उत्खनन **बी. आर. मीणा** तथा **आलोक त्रिपाणी** द्वारा वर्ष 1999-2000 में किया गया ।
- यह पुरातात्विक स्थल पहाड़ी पर स्थित था जबकि **आहड़ संस्कृति** से जुड़े अन्य स्थल नदी घाटियों में पनपे थे ।
- यहाँ से वृषभ तथा गाय की मृण्मय मूतियां प्राप्त हुई है जिन पर **सफेद रंग** से चित्रण किया हुआ है।

9. **नगरी (चित्तौड़गढ) :**

- नगरी नामक पुरातात्विक स्थल चित्तौड़गढ़ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है, जिसका **प्राचीन नाम माध्यमिका** मिलता है ।

ने सहायता नहीं की। अंततः कर्मवती ने सुल्तान से संधि कर ली। 24 मार्च, 1533 ई. को सुल्तान चित्तौड़ से लौट गया परन्तु 1534 ई. में सुल्तान ने फिर आक्रमण किया। महाराणा विक्रमादित्य को उदयसिंह सहित बूँदी भेज दिया गया और युद्ध तक देवलिये के रावत बाघसिंह को महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया। वीर रावत बाघसिंह चित्तौड़ दुर्ग के पाड़नपोल दरवाजे के बाहर तथा राणा सज्जा व सिंहा हनुमान पोल के बाहर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

- लड़ाई में सेनापति **रूमी खाँ** के नेतृत्व में बहादुर शाह की सेना विजयी हुई और हाडी रानी कर्मवती ने जौहर किया। यह चित्तौड़ का दूसरा साका कहलाता है। लेकिन बादशाह हुमायूँ ने तुरंत ही बहादुरशाह पर हमला कर दिया। जिससे सुल्तान कुछ साथियों के साथ माण्डू भाग गया। बहादुर शाह के हारने पर मेवाड़ के सरदारों ने पुनः चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया। फिर विक्रमादित्य पुनः वहाँ के शासक हो गए।
- बनवीर ने उदयसिंह का वध करना चाहा लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदय सिंह को बचा लिया। मेवाड़ का स्वामी बनकर बनवीर राज्य करने लगा। उदयसिंह द्वितीय को लेकर पन्नाधाय कुंभलनेर पहुंची। वहां के किलेदार **आशा देवपुरा** ने उन्हें अपने पास रख लिया।

महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई.)

- 1537 में कुछ सरदारों ने उदयसिंह को मेवाड़ का स्वामी मानकर कुम्भलगढ़ में राज्याभिषेक कर दिया। उदयसिंह ने सेना एकत्रित कर कुंभलगढ़ से ही चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बनवीर मारा गया। 1540 ई. में उदयसिंह अपने पैतृक राज्य का स्वामी बना। 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की नींव डाली।
- मुग़ल बादशाह अकबर ने 23 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया। महाराणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राज बहादुर को अपने यहाँ शरण देकर अकबर के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। महाराणा उदयसिंह राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर कुछ सरदारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों में चले गए। अकबर से युद्ध में **जयमल और कल्ला राठौड़** हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच और पत्ता रामपोल के भीतर वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। **25 फरवरी, 1568** को अकबर ने किले पर अधिकार कर लिया। यह चित्तौड़ दुर्ग का **तीसरा साका** था। **जयमल और पत्ता** की वीरता पर प्रसन्न होकर अकबर ने आगरा जाने पर हाथियों पर चढ़ी हुई, उनकी पाषाण की मूर्तियां बनवाकर किले के द्वार पर खड़ी करवाई **महाराणा उदयसिंह** का 28 फरवरी, 1572 ई. को गोगुन्दा में होली के दिन देहांत हो गया। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप सिंह (1572-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540
जन्म स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग
पिता - राणा उदय सिंह
माता - महाराणी जयवंता बाई
विवाह - उन्होंने 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौड़, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ
संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

- प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था, इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता है ।
- राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब **बहलोल खान** ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।
- 1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुग़ल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदयसिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीं रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाना पड़ा। उदयसिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुन्दा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

- उदयसिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के **पुत्र जगमाल** को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमाल में राजा बनने के गुण नहीं थे। **1572 में उदयसिंह** की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए, **1 मार्च 1572** को गद्दी संभाल ली, इस कारण जगमाल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर (भीलवाड़ा) की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

- महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोली अकबर के हरम में भेज दी, जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे, और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार संधि वार्ता प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमरसिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मानसिंह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के नहीं मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।
- वैसे कहा जाता है कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिन्दुस्तान दे देगा लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया

हल्दीघाटी का युद्ध

- 1576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिंह प्रथम और आसफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिंह झाला और चन्द्रसेन जी राठौड़ और अफगान से **हाकिम खान सुर** के अलावा भील समुदाय के मुखिया **राव पूंजा** की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुग़ल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे, वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हुआ। यह युद्ध **18 जून 1576** को 4 घंटे के लिए हुआ, मुग़ल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने गुप्त मार्ग बता दिया, जिससे मुगलों को आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुग़ल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व **मानसिंह प्रथम** कर रहे थे, प्रताप ने मानसिंह का सामना खुद करने का निश्चय किया और अपना घोड़ा उनके सामने ले गए लेकिन चेतक और प्रताप दोनों मानसिंह के हाथी से घायल हो गए। इसके बाद मानसिंह झाला ने अपना कवच प्रताप से बदल लिया था जिससे कि मुग़ल सेना में भ्रम पैदा हो सके, और राणा प्रताप बचकर निकल सके। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अरावली के कुछ हिस्सों को छोडकर पुरा मेवाड़ मुगलों के हाथ में चला गया ।
- जुलाई 1576 में प्रताप ने गोगुन्दा को मुगलों से वापिस कब्जे में ले लिया और कुम्भलगढ़ को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया, लेकिन अकबर ने खुद प्रताप पर चढ़ाई कर दी और गोगुन्दा, उदयपुर एवं कुम्भलगढ़ पर कब्जा कर लिया जिससे महाराणा वापिस पहाड़ों में लौटने को मजबूर हो गये।
- अगले कुछ वर्षों में कुम्भलगढ़ एवं चित्तौड़ ने अपनी खोयी हुई, सम्पति को वापिस कब्जे में ले लिया और साथ ही गोगुन्दा, रणथम्भौर और उदयपुर को भी छीन लिया। जब महाराणा प्रताप ने अकबर के सामने झुकने से मना कर दिया तब अकबर ने युद्ध की घोषणा कर दी। महाराणा ने अपनी राजधानी चित्तौड़ से हटाकर अरावली की पहाड़ियों में **कुम्भलगढ़** ले गए, जहां उन्होंने आदिवासियों और जनजातियों को सेना में शामिल करना शुरू किया। इन लोगों को युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, महाराणा ने उन्हें प्रशिक्षण दिया, इस तरह उन्होंने समाज के दो वर्गों को एक उद्देश्य के लिए एक दिशा में लाने का प्रयास किया। 1579 के बाद अकबर की बंगाल, बिहार और पंजाब पर ध्यान होने के कारण मेवाड़ पर पकड़ ढीली होने लगी, इस परिस्थिति का फायदा उठाकर प्रताप ने दान **शिरोमणि भामाशाह** के दान किये धन से कुम्भलगढ़ और चित्तौड़ के आस-पास के क्षेत्र पर वापिस कब्जा कर लिया, उन्होंने **40,000** की सेना एकत्र करके गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, रणथम्भौर और उदयपुर को भी मुगलों से मुक्त करवा लिया। 6 महीने बाद अकबर ने फिर से हमला किया लेकिन फिर से उसे मुंह की खानी पड़ी और आखिर में अकबर ने 1584 में जगन्नाथ को बड़ी सेना के साथ मेवाड़ भेजा लेकिन 2 वर्ष के संघर्ष के बाद भी वह राणा प्रताप को नहीं पकड़ सका।
- इस तरह हल्दीघाटी का युद्ध हो या इसके पश्चात् के छोटे-बड़े सम्मुख/गरिल्ला युद्ध दोनों पक्षों ने कभी हार नहीं स्वीकार की, और इन सब में राष्ट्र के लिए जो आज भी गौरव का विषय है वो राणा प्रताप का निरंतर संघर्ष और मेवाड़ को मुक्त करवाने की जिजीविषा है, जो उनकी मृत्यु तक उनके साथ थी।

दिवेर का युद्ध (अक्टूबर, 1582)

- महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की भूमि को मुक्त कराने का अभियान दिवेर से प्रारंभ किया। दिवेर वर्तमान राजसमंद जिले में उदयपुर-अजमेर मार्ग पर स्थित है। दिवेर के शाही थाने का मुख्तार सम्राट अकबर का काका सुल्तान खान था। महाराणा प्रताप ने उस पर अक्टूबर 1582 में आक्रमण किया। मेवाड़ और मुग़ल सैनिकों के मध्य निर्णायक युद्ध हुआ। महाराणा सम्राट को यश और विजय प्राप्त हुई, दिवेर की जीत की ख्याति चारों ओर फैल गई।
- प्रताप के जीवन के बहुत बड़े विजय अभियान का यह शुभ और कीर्तिदायी शुभारम्भ था। दिवेर की जीत के बाद महाराणा प्रताप ने चावंड (वर्तमान सराडा तहसील, सलूम्बर) में अपना निवास स्थान बनाया। अकबर ने अब

पुनः मेवाड़ की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। प्रताप अब भी परास्त नहीं हुआ है, यह भारत विजेता सम्राट कैसे सहन कर सकता है। अतः अकबर ने आमेर के राजा भारमल के छोटे पुत्र जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व मे 5 दिसंबर 1584 को एक विशाल सेना मेवाड़ के विरुद्ध रवाना की लेकिन जगन्नाथ को भी कोई सफलता नहीं मिली। वह भी प्रताप को नहीं पकड़ सका। यह अकबर का प्रताप के विरुद्ध अंतिम अभियान था।

- अब अकबर मेवाड़ मामले में इतना निराश हो चुका था कि छुटपुट कारवाई उसे निरर्थक लगी और बड़े अभियान के लिए वह अवकाश नहीं निकाल सका। 1586 से 1596 तक दस वर्ष की सुदीर्घ अवधि मे प्रताप को जहाँ का तहाँ छोड़ दिया गया। इसे अघोषित संधि कहा जा सकता है अथवा अपनी विवशता की अकबर द्वारा परोक्ष स्वीकृति, प्रताप ने 1585 में अपने स्थायी जीवन का आरम्भ चावंड मे मेवाड़ की नई राजधानी स्थापित करके किया।
- प्रताप के अंतिम बारह वर्ष और उनके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाज के प्रारंभिक 16 वर्ष चावंड मे बीते। चावंड 28 साल मेवाड़ की राजधानी रहा। चावंड गांव से लगभग आधा मील दूर एक पहाड़ी पर प्रताप ने अपने महल बनवाए। 19 जनवरी 1597 को प्रताप का चावंड मे देहांत हुआ। चावंड से कुछ दूर बांडोली गांव (वर्तमान सराड़ा तहसील, सलूम्बर) के निकट महाराणा का अंतिम संस्कार हुआ। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप और चेतक

- प्रताप के विश्वसनीय घोड़े का नाम चेतक था, जो कि 11 फीट लम्बा था। चेतक पर नीले रंग का निशान था इसलिए राणा प्रताप को "नीले घोड़े रा असवार कहा जाता है, जिसका मतलब **"नीले घोड़ी की सवारी करने वाला"** होता है।
- हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह के साथ युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप और उनका घोड़ा घायल हो गया था, फिर भी **26 फीट चौड़ी** नदी पार करने में उसने अपने स्वामी का सहयोग किया था, लेकिन इसके बाद वो ज्यादा जीवित नहीं रह सका। चेतक ने अपनी जान देकर भी अपने स्वामी की जान बचाई थी, महाराणा चेतक की मृत्यु पर बालक की तरह रोये थे। चेतक की मृत्यु के बाद ही **शक्ति सिंह** को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने **अपना** घोड़ा प्रताप को दे दिया।
- प्रताप चेतक को नहीं भूल सके, और बाद में उन्होंने उस जगह पर एक उद्यान बनवाया, जहां पर चेतक ने अंतिम सांस ली थी।

अमरसिंह प्रथम (1597-1620 ईस्वी)

- राणा अमरसिंह मेवाड़ राजस्थान के **सिसोदिया राजवंश** के शासक थे। इनके पिता महाराणा प्रताप थे तथा महाराणा उदयसिंह इनके दादा थे। राणा अमरसिंह भी महाराणा प्रताप जैसे वीर थे और इन्होंने मुग़लों से **18 बार** युद्ध लड़ा। जहांगीर ने मेवाड़ में प्रजा को मारना शुरु कर दिया था और बहुत सारे लोगों को बंदी भी बना दिया इस कारण राणा अमरसिंह को अपने अंतिम समय में जहांगीर से संधि करनी पड़ी थी। राणा अमरसिंह प्रजा भक्त थे। इनको गुलामी में रहना अच्छा नहीं लगा फिर इन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र को देकर खुद एक कुटिया में रहने लग गए।
- अमरसिंह प्रथम महाराणा प्रताप के पुत्र थे, जिनका राज्याभिषेक चावंड में हुआ।
- अमरसिंह प्रथम के पुत्र कर्णसिंह व सिसोदिया सरदारों के कहने पर अमरसिंह ने **5 फरवरी, 1615 ई.** में मुगलों के साथ संधि की तथा निम्न शर्तें रखी।
- मुग़ल-मेवाड़ वैवाहिक सम्बन्ध स्वीकार नहीं, मेवाड़ महाराणा मुग़ल दरबार में उपस्थित नहीं होगा।
- शाही सेना में महाराणा 1000 सवार रखेगा, महाराणा का ज्येष्ठ कुंवर शाही दरबार में उपस्थित होगा आदि।
- अमरसिंह प्रथम का देहांत 26 जनवरी, 1620 को हुआ तथा इनकी छतरी आहड़ (उदयपुर) में बनी हुई है।
- अमरसिंह मेवाड़ का पहला महाराणा था, जिसने मुगलों के साथ संधि की तथा जहाँगीर ने एकमात्र मेवाड़ राज्य के शासक को मुग़ल दरबार में उपस्थित होने की छूट दी।
- इस संधि के बारे में कथन कर्नल टॉड ने कहा कि - 'बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपस के समझौते से अधीन किया था, न कि बल से।'

कर्णसिंह (1620-1628)

- ये मेवाड़ के पहले शासक थे, जिन्हें मुग़ल दरबार में 1000 की मनसबदारी दी गई, महाराणा कर्णसिंह ने जगमंदिर महलों को बनवाना शुरू किया। जिसे उनके पुत्र महाराणा जगतसिंह ने पूर्ण किया। इसलिए यह महल **जगमंदिर एवं जगनिवास** कहलाते हैं।
- **पिछोला झील** के किनारे जगमंदिर महल निर्माण कार्य कर्णसिंह ने प्रारम्भ किया था तथा इसको जगतसिंह प्रथम ने पूर्ण करवाया था।
- कर्णसिंह ने 1623-24 ई. में शाहजहाँ (शहजादा खुर्रम) को पिछोला झील के जगमंदिर महल में शरण दी।
- इसी जगमंदिर महल को देखकर शाहजहाँ ने **मुमताज** की याद में ताजमहल बनवाया।
- कर्णसिंह ने कर्णविलास तथा दिलखुश महलों का निर्माण करवाया था।

जगतसिंह प्रथम (1628-1652 ईस्वी)

- कर्णसिंह के बाद उसका पुत्र जगतसिंह प्रथम महाराणा बना। उसका राज्याभिषेक 28 अप्रैल, 1628 को हुआ। 1652 ई. में उदयपुर में जगन्नाथ राय (जगदीश जी) का भव्य मंदिर बनवाया। मंदिर की विशाल प्रशस्ति की (जगन्नाथ राय प्रशस्ति) रचना कृष्णभट्ट ने की। 10 अप्रैल, 1652 ई. को उदयपुर में जगतसिंह प्रथम की मृत्यु हो गई।

अध्याय – 5

मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली

मध्यकाल में राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था से तात्पर्य मुगलों से संपर्क के बाद से लेकर 1818 ईस्वी में अंग्रेजों के साथ हुई संधियों की काल अवधि के अध्ययन से है । इस काल अवधि में राजस्थान में **22 छोटी बड़ी रियासतें** थी और अजमेर मुग़ल सूबा था।

इन सभी रियासतों का अपना प्रशासनिक तंत्र था लेकिन, कुछ मौलिक विशेषताएं एकरूपता लिए हुए भी थी । रियासतें मुग़ल सूबे के अंतर्गत होने के कारण मुग़ल प्रभाव भी था । राजस्थान की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के मूलतः 3 आधार थे ।

- सामान्य एवं सैनिक प्रशासन ।
- न्याय प्रशासन ।
- भू-राजस्व प्रशासन ।

संपूर्ण शासन तंत्र राजा और सामन्त व्यवस्था पर आधारित था । राजस्थान की सामन्त व्यवस्था रक्त संबंध और कुलीय भावना पर आधारित थी । सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने यहाँ की सामन्त व्यवस्था को इंग्लैंड की फ्यूडल व्यवस्था के समान मानते हुए उल्लेख किया है।

राजस्थान की सामन्त व्यवस्था पर व्यापक शोध कार्य के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि यहाँ की सामन्त व्यवस्था कर्नल टॉड द्वारा उल्लेखित पश्चिम के फ्यूडल व्यवस्था के समान स्वामी (राजा) और सेवक (सामन्त) पर आधारित नहीं थी ।

राजस्थान के सामन्त व्यवस्था रक्त संबंध एवं कुलीय भावना पर आधारित प्रशासनिक और सैनिक व्यवस्था थी।

केन्द्रीय शासन (Central Government)

राजा – सम्पूर्ण शक्ति का सर्वोच्च केंद्र

- **प्रधान** – राजा के बाद प्रमुख । अलग-अलग रियासतों में अलग-अलग नाम – कोटा और बूँदी में दीवान, जैसलमेर, मारवाड़ मेवाड़ में प्रधान, जयपुर में मुसाहिब, बीकानेर में मुखत्यार कहते थे।
- भरतपुर में राजा के बाद प्रधान को मुखत्यार कहते थे ।
- **दीवान एवं बक्षी** – अधिकांशत : जहाँ तीन प्रमुख थे वहाँ बक्षी होते थे । यह सेना विभाग का प्रमुख होता था । जोधपुर में फौज बक्षी भी होता था।
- **नायब बक्षी** – सैनिकों व किलों पर होने वाले खर्च और सामन्तों की रेख का हिसाब रखता था ।
- **नोट – रेख** = एक जागीरदार की जागीर की वार्षिक आय होती थी ।
- **शिकदार**- मुग़ल प्रशासन के कोतवाल के समान होता था। यह गैर सैनिक कर्मचारियों के रोजगार सम्बंधी कार्य देखता था ।
- **सामन्ती श्रेणियां (Feudal System)**
- कर्नल टॉड ने सामन्ती व्यवस्था को इंग्लैंड में चलने वाली फ्यूडल व्यवस्था के समान माना है।

सामन्त श्रेणियां –

- **मारवाड़**- चार प्रकार की राजवी, सरदार, गनायत, मुत्सद्दी
- **मेवाड़** – तीन श्रेणियां, जिन्हें उमराव कहा जाता था । सलूम्बर के सामन्त का विशेष स्थान ।
- **जयपुर** – पृथ्वीसिंह के समय श्रेणी विभाजन। 12 पुत्रों के नाम से 12 स्थायी जागीरे चली जिन्हें कोटडी कहा जाता था।
- **कोटा**- में सामंत राजवी कहलाते थे।
- **बीकानेर** – में सामन्तों की तीन श्रेणियां थी।
- जैसलमेर में दो श्रेणियां थी।

अन्य श्रेणियां – भौमिया सामन्त, ग्रासिया सामन्त

सामन्त व्यवस्था (Feudal system)

- राजस्थान में परम्परागत शासन में राजा -सामन्त का संबंध भाई-बंधु का था। मुग़ल काल में सामन्त व्यवस्था में परिवर्तन । अब स्थिति स्वामी – सेवक की स्थिति।

सेवाओं के साथ कर व्यवस्था –

परम्परागत शासन में सामन्त केवल सेवाएं देता था। लेकिन मुग़ल काल से कर व्यवस्था भी निर्धारित की गयी।

सामन्त अब

- **पट्टा रेख** – राजा द्वारा जागीर के पट्टे में उल्लेखित अनुमानित राजस्व।
- **भरत रेख** – राजा द्वारा सामन्त को प्रदत जागीर के पट्टे में उल्लेखित रेख के अनुसार राजस्व ।
- **उत्तराधिकार शुल्क** – जागीर के नये उत्तराधिकारी कर से वसूल किया जाने वाला कर । अलग-अलग रियासतों में इसके नाम -मारवाड़ – पहले पेशकशी फिर हुक्मनामा, मेवाड़ और जयपुर में नजराना, अन्य रियासतों मे कैद खालसा या तलवार बंधाई नाम था।, जैसलमेर एकमात्र रियासत जहाँ उत्तराधिकारी शुल्क नहीं लिया जाता था।
- **नजराना कर**- राजा के बड़े पुत्र के विवाह पर दिया जाने वाला कर ।
- न्योत कर
- तीर्थ यात्रा कर

भूमि और भू स्वामित्व (Land and Land Ownership)

भूमि दो भागों में विभाजित थी –

1. **खालसा भूमि (Khalsa land)**- जो कि सीधे शासक के नियंत्रण में होती थी जिसे केंद्रीय भूमि भी कह सकते हैं ।
2. **जागीर भूमि** – यह चार प्रकार की थी ।

सामन्त जागीर (Feudal Estate) – यह जागीर भूमि जन्मजात जागीर थी जिसका लगान सामन्त द्वारा वसूल किया जाता था।

हुकूमत जागीर – यह मुत्सद्दियों को दी जाती थी।

भौम जागीर – राज्य को निश्चित सेवाएँ व कर देते थे।

शाषण जागीर – यह माफी जागीर भी कहलाती थी। यह कर मुक्त जागीर थी। धर्मार्थ, शिक्षण कार्य, साहित्य लेखन कार्य, चारण व भाट आदि को अनुदान स्वरुप दी जाती थी।

- इसके अलावा भूमि को और दो भागों में बांटा गया-
- कृषि भूमि (Agricultural land) – खेती योग्य भूमि।
- चरनोता भूमि (Charnote land)- पशुओं के लिए चारा उगाया जाता था।

किसान- दो प्रकार के थे –

- **बापीदार** – खुदकाश्तकार और भूमि का स्थाई स्वामी
- **गैरबापीदार** – शिकमी काश्तकार और भूमि पर वंशानुगत अधिकार नहीं। ये खेतीहर मजदूर थे।

दाखला – किसानों को दी जाने वाली भूमि का पट्टा जो जागीरदार के रजिस्टर में दर्ज रहता था।

लगान वसूली की विधि (Tax collection method)

लगान वसूली की तीन विधि अपनाते थे-

लाटा या बटाई विधि- फसल कटने योग्य होने पर लगान वसूली के लिए नियुक्त अधिकारी की देखरेख में कटाई तथा धान साफ होने पर राज्य का भाग अलग किया जाता था।

कून्ता विधि- खड़ी फसल को देखकर अनुमानित लगान निर्धारित करना।

अन्य विधि – इसे तीन भागों में – मुकाता, डोरी और घूघरी

- डोरी और मुकाता में कर निर्धारण एक मुश्त होता था। नकद कर भी लिया जाता था। डोरी कर निर्धारण में नापे गये भू-भाग का निर्धारण करके वसूल करना।
- घूघरी कर विधि के अनुसार शासक, सामन्त एवं जागीरदार किसान को जितनी घूघरी (बीज) देता था उतना ही अनाज के रूप में लेता था। दूसरी घूघरी विधि में प्रति कुआं या खेत की पैदावार पर निर्भर था।
- मध्यकाल में राजस्थान में प्रचलित विभिन्न लाग-बाग।

प्रशासनिक व्यवस्था

- भू-राजस्व के अतिरिक्त कृषकों से कई अन्य प्रकार के कर वसूल किए जाते थे उन्हें लाग - बाग कहा जाता था लाग-बाग दो प्रकार के थे–
- नियमित
- अनियमित

नियमित लाग – की रकम निश्चित होती थी और उसकी वसूली प्रतिवर्ष या 2-3 वर्ष में एक बार की जाती थी।

अनियमित लाग - की रकम निश्चित नहीं थी उपज के साथ-साथ यह कम या ज्यादा होती रहती थी इन लागों के निर्धारण का कोई निश्चित आधार नहीं था।

- **नल बट एवं नहर वास** - यह लाग सिंचित भूमि पर ली जाती थी।
- **जाजम लाग**- भूमि के विक्रय पर वसूली जाने वाली लाग।
- **सिंगोटी** - मवेशी के विक्रय के समय वसूली जाने वाली लाग।
- **मलबा और चौधर बाब** - मारवाड़ में मालगुजारी के अतिरिक्त किसान से यह कर वसूल करने की व्यवस्था थी मलबा की आय से फसल की रक्षा संबंधी किए गए खर्च की पूर्ति की जाती थी और उन व्यक्तियों को पारिश्रमिक देने की व्यवस्था रहती थी जिन्होंने बटाई की प्रक्रिया में भाग लिया था।
- मारवाड़ में जागीर क्षेत्र में खारखार, कांसा, शुकराना (खिड़की या बारी खुलाई) हासा, माचा, हल, मवाली, आदि प्रमुख लागें थी।
- **धूँआ भाछ** - बीकानेर राज्य में यह कर वसूल किया जाता था।
- **घर की बिछोती** - जयपुर राज्य में इस कर की वसूली की जाती थी।
- **घास मरी** - विभिन्न प्रकार के चराई करो का सामूहिक नाम था।
- **अंगाकर** - मारवाड़ में प्रति व्यक्ति ₹ । की दर से महाराजा मानसिंह के समय इस कर की वसूली की गई थी।
- **खेड़ खर्च** - राज्य में सेना के खर्च के नाम से जो कर लिया जाता था उसे खेड़ खर्च या फौज खर्च की संज्ञा दी गई थी।
- गनीम बराड़ - मेवाड़ में युद्ध के समय गनीम बराड़ कर वसूल किया जाता था।
- **कागली या नाता कर** - विधवा के पुनर्विवाह के अवसर पर प्रतिभा ₹ । की दर से यह कर वसूल किया जाता था।
- मेवाड़ में नाता बराड़, कोटा राज्य में नाता कागली, बीकानेर राज्य में नाता और जयपुर राज्य में छैली राशि के नाम से यह कर लिया जाता था।
- **जकात कर - बीकानेर राज्य में सीमा शुल्क आयात निर्यात और चुंगी कर का सामूहिक नाम जकात था।**
- जोधपुर और जयपुर राज्य में पारिवारिक भाषा में इसे सायर की संज्ञा दी थी।
- **दाण कर** - मेवाड़ और जैसलमेर राज्यों में माल के आयात निर्यात पर लगाया जाने वाला कर दाण कहलाता था।
- **मापा, बारुता कर** - मेवाड़ में। गाँव से दूसरे गाँव में माल लाने ले जाने पर यह कर वसूल किया जाता था।
- जबकि बीकानेर राज्य में बिक्रीकर को मापा के नाम से पुकारते थे।
- **लाकड़ कर** - जंगलात की लकड़ियों पर लाकड़ कर लिया जाता था।

इस कर को बीकानेर में काठ जयपुर में दरख्त की बिछोती मेवाड़ में खड़लाकड़ और मारवाड़ में कबाड़ा बाब के नाम से पुकारते थे।

- **राली लाग** - प्रतिवर्ष काश्तकार अपने कपड़ों में से एक गद्दा या राली बना कर देता था जो जागीदार या उसकी कर्मचारियों के काम आती थी।
- **दस्तूर** – भू-राजस्व कर्मचारी पटेल पटवारी कानूनगो तहसीलदार और चौधरी जो अवैध रकम किसानों से वसूल करते थे उसे दस्तूर कहा जाता था।
- **नजराना** - यह लाग प्रतिवर्ष किसानों से जागीरदार और पटेल वसूल करते थे जागीरदार राजा को और पटेल तहसीलदार को नजराना देता था जिसकी रकम किसानों से वसूल की जाती थी।
- **बकरा लाग** - प्रत्येक काश्तकार से जागीरदार एक बकरा स्वयं के खाने के लिए लेता था। व जागीरदार बकरे के बदले प्रति परिवार से ₹2 वार्षिक लेते थे।
- **न्योता लाग** - यह लाग जागीरदार पटेल और चौधरी अपने लड़के लड़की की शादी के अवसर पर किसानों से वसूल करते थे।
- **चंवरी लाग - किसानों के पुत्र या पुत्री के विवाह पर एक से ₹25 तक चंवरी लाग के नाम पर लिए जाते थे।**
- **कुंवर जी का घोड़ा** - कुंवर के बड़े होने पर घोड़े की सवारी करना सिखाया जाता था तब घोड़ा खरीदने के लिए प्रति घर से ₹1 कर के रूप में लिया जाता था।
- **खरगढ़ी** - सार्वजनिक निर्माण या दुर्गों के भीतर निर्माण कार्यों के लिए गाँव से बेगार में गधों को मंगवाया जाता था, परन्तु बाद में गधों के बदले खरगढ़ी लाग वसूल की जाने लगी।
- **खिचड़ी लाग** - जागीरदार द्वारा अपने प्रत्येक गाँव से उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार ली जाने वाली लाग राज्य की सेना जब किसी गाँव के पास पड़ाव डालती है तब उसके भोजन के लिए गाँव के लोगों से वसूली जाने वाली लाग खिचड़ी लाग कहलाती थी।
- **अंग लाग** – प्रत्येक किसान के परिवार के प्रत्येक सदस्य से जो 5 वर्ष से ज्यादा आयु का होता था प्रति सदस्य ₹1 लिया जाता था।

राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार

- मराठा शक्ति के संस्थापक छत्रपति शिवाजी अपने आपको वैदिक कालीन क्षत्रियों का वंशज मानते थे, और अपने को मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश का वंशज बताते थे। अतः शिवाजी ने इस रक्त संबंध के आधार पर राजपूतों से राजनैतिक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया था। शिवाजी के काल में राजपूत और मराठों के बीच अप्रत्यक्ष संबंध स्थापित हुए थे।
- शिवाजी मुग़ल साम्राज्य और बीजापुर के मुस्लिम राज्य के विरुद्ध अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे, जबकि राजपूत शासक जसवंतसिंह और मिर्जा राजा जयसिंह मुग़ल साम्राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिये शिवाजी की गतिविधियों को नियंत्रित करके उसकी नवोदित शक्ति को कुचलना चाहते थे।
- मेवाड़ के महाराणा राजसिंह और शिवाजी समकालीन थे और दोनों ने मुग़ल सम्राट औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का विरोध किया था। औरंगजेब ने जब हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाया था तब केवल मेवाड़ और **महाराष्ट्र** ने मुग़ल सम्राट के पास विरोध पत्र भेजे थे। इससे स्पष्ट होता है कि मुगलों के प्रति नीति एवं लक्ष्य निर्धारित करने में महाराणा राजसिंह और शिवाजी के बीच घनिष्ठ और मधुर संबंध स्थापित हुए थे।
- औरंगजेब ने शिवाजी की शक्ति का दमन करने के लिये पहले शाइस्ता खाँ और जसवंतसिंह को भेजा था, लेकिन उन्हें अपने अभियान में सफलता नहीं मिली। खफीखाँ ने जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह द्वारा शिवाजी की शक्ति का दमन करने का दायित्व आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को सौंपा, जिसने शिवाजी को शाही दरबार में उपस्थित होने के लिये राजी कर लिया। किन्तु जब औरंगजेब ने जयसिंह द्वारा शिवाजी को दिये गये वचन को भंग कर शिवाजी को बन्दी बना लिया, तब जयसिंह के पुत्र रामसिंह ने अप्रत्यक्ष रूप से शिवाजी की सहायता की और उसकी मुक्ति को संभव बनाया।
- 1667 ई. में जब औरंगजेब ने शाहजादे मुअज्जम और जसवंतसिंह को शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिए भेजा, तब शिवाजी ने जसवंतसिंह को पत्र लिखकर मुगलों से संधि करवाने में सहायता करने की प्रार्थना की थी और जसवंतसिंह की सलाह पर ही औरंगजेब ने शिवाजी को क्षमा करते हुए उसके साथ समझौता कर लिया था। इन तथ्यों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राजपूत शासकों ने मराठों से अपने भावनात्मक संबंधों के आधार पर उनकी सहायता की, लेकिन मराठों ने केवल अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति करने के लिये राजपूत शासकों से सहयोग माँगा। आगे चलकर राजपूत-मराठा संबंधों में इसी तथ्य की प्रधानता दिखाई देती है। शिवाजी की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंभाजी के शासन काल में जब मारवाड़ के राठौड़ सरदार, महाराजा जसवंतसिंह के मरणोपरांत उत्पन्न पुत्र अजीतसिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बैठाने के लिये मुगलों से संघर्ष कर रहे थे, उस समय औरंगजेब के पुत्र शाहजादे अकबर द्वारा राजपूतों के साथ मिलकर विद्रोह करने पर औरंगजेब ने उसे बंदी बनाना चाहा, तब वीर दुर्गादास राठौड़ के आग्रह पर शंभाजी ने शाहजादे अकबर को शरण देकर राजपूतों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया।
- औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में उत्तराधिकार संघर्ष छिड़ गया।
- मुख्य संघर्ष उत्तर में स्थित शाहजादा मुअज्जम और दक्षिण में तैनात शाहजादा आजम के बीच था। शंभाजी की मृत्यु के बाद मुगलों ने, शंभाजी की विधवा पत्नी येसूबाई, उसका छोटा पुत्र शाहू और परिवार के कुछ सदस्यों को बंदी बना लिया था, जो इस समय आजम की हिरासत में थे। जब

कला संस्कृति

अध्याय – I

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ

किले और स्मारक (छतरियाँ)

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ, तालाब, कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-

(i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग

- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।
- **शुक्र नीति के अनुसार ९ प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न है-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

1. एरन दुर्ग

- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

2. धान्वन (मरूस्थल) दुर्ग

- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- जैसलमेर, बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

3. औदक दुर्ग (जलदुर्ग)

- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

4. गिरि दुर्ग

- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़, तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

5. सैन्य दुर्ग

- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।

6. सहाय दुर्ग

- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

7. वन दुर्ग

- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग, त्रिभुवनगढ़ दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग।

8. पारिख दुर्ग

- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग, भरतपुर।

9. पारिध दुर्ग

- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़ दुर्ग।

❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)

❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)

❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग

❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल ९९ बुर्ज)

❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (ब्यावर)

❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)

❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)

❖ वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

❖ **चित्तौड़गढ़ का किला**

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।

https://www.infusionnotes.com/

- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न हैं-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष 1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।
- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
3. हनुमान पोळ
4. लक्ष्मण पोळ
5. जोड़न पोळ
6. त्रिपोलिया पोळ
7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ **दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल**

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार/ महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- इस दुर्ग में जयमल, फत्ता, कल्ला राठौड़, रैदास, बाघसिंह की छतरियाँ हैं ।
- दुर्ग में पद्मिनी महल, गौरा - बादल महल, पुरोहितों की हवेली, फतेहमहल, भामाशाह की हवेली, सलूम्बर हवेली, रामपुरा हवेली, आहाड़ा हिंगलू का महल, रतनसिंह महल, आल्हा काबरा की हवेली, राव रणमल की हवेली प्रमुख हैं।

❖ **विजय स्तम्भ**

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं
- **विजय स्तम्भ के उपनाम**

- **विक्ट्री टावर,**
- **रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन**
- **कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड**
- **हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास**
- **संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़**
- **लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा**
- **विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति**
- इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष में करवाया।

- इस दुर्ग में शम्बुबाण, गजनी खां, किलकिला, जमजमा, कड़क बिजली, नुसरत, गुब्बार, धुड्धणी नामक तोपे स्थित है ।
- इस दुर्ग की तलहटी में जसवंत थड़ा है जिसे राजस्थान का ताजमहल कहते हैं। इसका निर्माण सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंत सिंह द्वितीय की याद में करवाया।
- इस दुर्ग में झरनेश्वर महादेव, ज्वाला माता, मुरली मनोहरजी, आनन्द्धन चामुण्डा माता, नागणेची माता का मन्दिर स्थित है।
- यहाँ जहूर खां व भूरे खां की मजार है।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मोती महल, फूल महल, चौखेलाव महल प्रमुख महल है।
- दुर्ग में श्रृंगार चौकी है जहाँ राठौड़ों का राजतिलक होता था। श्रृंगार चौकी का निर्माण तख्त सिंह ने करवाया था।
- जोधा की 'रानी जसमा दे हाड़ी ने 'रानीसर तालाब' बनवाया, इससे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- इस दुर्ग को 2005 ई. में यूनेस्को अवॉर्ड दिया गया था।

❖ ***जैसलमेर दुर्ग***

- जैसलमेर के राजा जैसल (1155 ई.) ने इस किले का निर्माण करवाया।
- जैसलमेर के किले में सर्वाधिक 99 बुर्जे बने हुई हैं।
- इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है-" गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो अधगढ़ बीकानेर, भलो चिणायो भाटियो सिरे टू जैसलमेर"
- ऐसा दुर्ग जहाँ पहुँचने के लिए पत्थर की टाँगे चाहिए।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा- घोड़ा किजे काठ का पग किजे पाषाण, अख्तर कीजे लोहे का तब पहुँचे जैसाण।
- यह दुर्ग त्रिकूट पहाड़ी पर बना हुआ है।
- इस दुर्ग में दोहरा परकोटा और आकृति घाघरेनुमा होने के कारण इसे कमरकोट कहते हैं।
- इस दुर्ग में प्रवेश अक्षयपोल से होता है।
- इस दुर्ग को स्वर्णगिरी, भाटी भड़ कीवाड़, पश्चिमी सीमा का प्रहरी, रेगिस्तान का गुलाब, गोहरगढ़, त्रिकूटगढ़, जैसाणगढ़, गलियों का दुर्ग कहते हैं।
- इस दुर्ग के निर्माण में चूने का प्रयोग नहीं हुआ है, इस दुर्ग की छत लकड़ी से बनी है जिस पर गोमूत्र से लेप किया गया है।
- वर्ष 2009 में इस दुर्ग पर ₹ 5 की डाक टिकट जारी की गई।
- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान, रेगिस्तान में लंगर डाले जहाज के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरि का किला कहते हैं इसे सोनार का किला भी कहते हैं।
- सत्यजीत रे ने 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी ।
- इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है-" गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो अधगढ़ बीकानेर, भलो चिणायो भाटियो सिरे तू जैसलमेर"
- **इस दुर्ग में ढाई साके हुए थे-**

  प्रथम साका - दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मूलराज भाटी पर आक्रमण किया। यह साका 1312 ई. में हुआ था।

  दूसरा साका- दिल्ली शासक फिरोज तुगलक ने 1370-71 ई. में जैसलमेर शासक राव दूदा पर आक्रमण किया ।

  तीसरा अर्द्ध साका - इसमें कंधार के अमीर अली ने 1550 ई. में जैसलमेर शासक लूणकरण के साथ धोखा कर दुर्ग की महिलाओं को बंदी बना लिया जिससे महिलाएँ जौहर नहीं कर पायी।
- इस दुर्ग में लक्ष्मीनाथ मन्दिर, बादल विलास महल, गजविलास महल, जवाहर विलास महल, हरराज महल स्थित हैं। यहाँ जैन भद्र सूरि नामक पुस्तकालय है, जो भूमिगत है।
- जैसे जहाज ने रखा है । दूर से देखने पर यह दुर्ग अंगड़ाई लेते हुए है । शेर के समान दिखाई देता इस दुर्ग में सर्वाधिक 99 बुर्ज स्थित हैं । लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति मेड़ता से लायी गयी।
- इस किले में प्राचीन नाली व्यवस्था है, जो वर्षा जल को आसानी से निकाल देती है, उसे 'घूट नाली' कहते हैं।

❖ ***बीकानेर दुर्ग***

- जूनागढ़ दुर्ग बीकानेर के पुराने गढ़ की नींव बीकानेर के संस्थापक राव बीकाजी ने करणी माता के आशीर्वाद से 1488ई. में रखी थी। जिसे 'बीकाजी की टेकरी' कहते हैं।
- उसी जगह इस जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण रायसिंह ने 1588 ई. फाल्गुन सुदी 12 विक्रम संवत् 1645 को करवाया।
- यह दुर्ग राती घाटी नामक चट्टान पर बना हुआ है और इस दुर्ग को राती घाटी का किला कहते हैं।
- इस दुर्ग को ज़मीन का ज़ेवर नाम से भी जाना जाता है यह दुर्ग चतुष्कोणीय या चतुर्भुजाकृति में बना हुआ है।
- जूनागढ़ दुर्ग का प्रवेश द्वार सूरजपोल है जहाँ पर पीले पत्थरों से निर्मित 1567 ई. के चित्तौड़ के साके में वीरगति पाने वाले जयमल मेड़तिया और उनके बहनोई आमेट के रावत फत्ता सिसोदिया की गजारूढ़ मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन मूर्तियाँ का निर्माण राव रायसिंह द्वारा 1590 ई. में करवाया गया था। बाद इन मूर्तियों को औरंगजेब ने तुड़वा दी।
- इसमें 37 बुर्जे बनी हुई हैं।
- **दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थल-**

अनूप महल-

- इसका निर्माण महाराजा अनूपसिंह ने करवाया था।
- इस महल में सोने की कलम से काम किया हुआ है।
- यहीं पर बीकानेर के राजाओं का राजतिलक होता था।

लालगढ़ महल –

- इसका निर्माण महाराजा गंगासिंह ने अपने पिता लालसिंह की स्मृति में लाल पत्थरों से करवाया था।

कर्ण महल-

- इसका निर्माण महाराजा अनूपसिंह ने अपने पिता कर्णसिंह की स्मृति में करवाया।

तैंतीस करोड़ देवी – देवताओं का मंदिर है जिसमें सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा स्थित है। जूनागढ़ दुर्ग में बने संग्रहालय में एक हजार वर्ष पुरानी सरस्वती की प्रतिमा दर्शनीय है।

❖ भटनेर का किला

- घग्घर नदी के किनारे स्थित इस दुर्ग का निर्माण 288 ई. में राजा भूपत भाटी ने करवाया।
- इस दुर्ग का प्रमुख शिल्पी कैंकया था।
- यह राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग है।
- इस दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी कहते हैं है।
- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी आक्रमण इस दुर्ग ने सहे हैं।
- इस दुर्ग का पुनः निर्माण 12वीं सदी में अभयराव भाटी ने करवाया था।
- वर्ष 1398 ई. में जब यहाँ के शासक दुलचन्द पर तैमूर लंग का आक्रमण हुआ उस समय मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया जो राजस्थान में एकमात्र था।
- तैमूर लंग अपनी आत्मकथा तुजुक - ए -तैमूरी में इस दुर्ग को अपने जीवन का सबसे मजबूत दुर्ग बताया था।
- 1805 ई. में मंगलवार के दिन बीकानेर के सूरतसिंह ने भटनेर शासक जाब्तासिंह भाटी को हराकर दुर्ग पर अधिकार कर इसका नाम हनुमानगढ़ कर दिया।
- रायसिंह के बेटे दलपत सिंह एवं उसकी पाँच रानियों के स्मारक बने हुए हैं। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरुद्ध भी विद्रोह किया था) इस दुर्ग में दिल्ली के सुल्तान बलबन के भाई शेर खां की कब्र है ।
- इसमें भद्रकाली माता का मंदिर, गुरु गोरखनाथ का मन्दिर बना हुआ है ।

❖ जालौर का किला

- इस दुर्ग का निर्माण प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने 8वीं सदी में सूकड़ी नदी के किनारे करवाया (दशरथ शर्मा के अनुसार) था।
- हीराचंद ओझा के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण 10वीं सदी में धारावर्ष परमार ने करवाया।
- यह दुर्ग कनकाचल / सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग को सुवर्ण गिरी, कंचनगिरी, जाबालीपुर (जाबाली ऋषि की तपोभूमि होने के कारण) कहते हैं।
- कीर्तिपाल चौहान ने 1181 ई. में परमारों से यह दुर्ग छीना था।
- वर्ष 1311ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया । इस समय यहाँ का शासक कान्हडदेव चौहान था। बीका दहिया के विश्वासघात के कारण दुर्ग के गुप्त रास्ते की जानकारी अलाउद्दीन खिलजी को लगी। गुप्त रास्ते की खोज के लिए राई का प्रयोग किया गया इस कारण जालौर के बाजार में रात को उच्च दामों पर राई खरीदी गई जिस कारण इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है – राई रा भाव राते ही गिय्या।

- **समाधी प्रथा** - मृत्यु को जीते जी धारण कर लेना (समाधी) प्रथा कहलाती हैं ।
  - जयपुर के राजा रामसिंह द्वितीय के समय 1844 ई. में सर्वप्रथम इस प्रथा पर रोक लगाई गई ।
- **संथारा प्रथा** - इस प्रथा का वर्णन जैन ग्रंथों में मिलता हैं । इसमें अन्न, जल को त्यागकर समत्व भाव से देह का त्याग किया जाता हैं ।
- **बाल-विवाह प्रथा** - बालक व बालिका को छोटी उम्र में ही विवाह कर देना बाल-विवाह कहलाता है। अजमेर के समाजसेवी हरविलास शारदा के प्रयासों से 1929 ई. में शारदा एक्ट बनाया गया।
- **पर्दा प्रथा** -मुस्लिम आक्रमणकारियों के आने के बाद राजस्थान की औरतों में पर्दा प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ था।
- **दास प्रथा** - दास ऐसे व्यक्ति होते थे, जो युद्ध में पराजित होने पर बंदी बना लिए जाते थे ।
  - इन दासों का क्रय-विक्रय भी किया जाता था ।
  - इस प्रथा पर राज्य में सर्वप्रथम रोक 1832 ई. में कोटा रियासत ने लगाई थी ।
- **बेगार प्रथा** - वह काम जिसके बदले में मेहनताना प्राप्त न हो 'बेगार' कहलाती हैं ।
  - एकीकरण के बाद बंधित श्रम पद्धति अधिनियम, 1976 द्वारा इस प्रथा पर रोक लगाई गई थी ।
- **सागड़ी प्रथा / बंधुआ मजदूर प्रथा**
  - संपन्न व्यक्ति या महाजनों द्वारा उधार दी गई राशि के बदले किसी व्यक्ति को अपने घर पर नौकर के रूप में रखना सागड़ी प्रथा कहलाती हैं ।
  - इस प्रथा पर रोक लगाने के लिए राज्य सरकार ने 1961 में सागड़ी निवारण अधिनियम बनाया ।
- **आन प्रथा**
  - मेवाड़ के महाराणा के प्रति ली जाने वाली स्थायी भक्ति की शपथ ही 'आन प्रथा' कहलाती थी ।
- **कूकड़ी की रस्म**
  - इसमें सांसी जनजाति की युवती को शादी होने पर अपने चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती हैं।
- **चारी प्रथा**
  - भीलवाड़ा के खेराड़ क्षेत्र में प्रचलित इस प्रथा में लड़की के परिवार वाले लड़के के घर वालों से दहेज की तरह नकद राशि(कन्या मूल्य) लेते हैं ।
- **रियाण**
  - मारवाड़ में 'रियाण' का अर्थ सभा होती हैं जिसमें अफीम गालने और एक-दूसरे को प्रदान करने की प्रथा हैं ।
- **मौताणा प्रथा**
  - मौताणा प्रथा में किसी व्यक्ति की मौत दुसरे व्यक्ति की वजह से हुई है, तो उससे 20 लाख तक का जुर्माना वसूला सकता हैं ।

अध्याय – 11

राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय

- प्रदेश में सर्वाधिक हिन्दू पाये जाते हैं, जो वैष्णव धर्म में आस्था रखते हैं ।
- यहाँ मुख्य रूप से वैष्णव, शैव व शाक्त मत के अनुयायी पाये जाते हैं ।
- ये मत ही अनेक सम्प्रदायों में बंटे है।
- राजस्थान में मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों के लोग पाये जाते हैं –

1. **सगुण सम्प्रदाय** –
   - इसमें ईश्वर को सर्वस्व मानकार ईश्वर के मूर्त रूप की पूजा – आराधना की जाती है ।
   - इसमें रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, निर्बाक सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय, पाशुपत सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय, मीरा दासी सम्प्रदाय, निष्कलंकी सम्प्रदाय मुख्य रूप से सम्मिलित है ।
2. **निर्गुण सम्प्रदाय** –
   - इस मत के समर्थक ईश्वर को निराकार एवं निर्गुण परमसत्ता मानकर उसकी भक्ति करते है।
   - ये निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते है, जो आत्मा व मूर्ति पूजा के विरोधी होते हैं ।
   - निर्गुण भक्ति धारा में मुख्यतः - बिश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दादूपंथी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, परनामी सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, लालदासी सम्प्रदय, कबीर पंथी सम्प्रदाय आदि शामिल है ।

❖ **राजस्थान के प्रमुख सगुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय**

❖ **मीरा बाई (मीरा दासी सम्प्रदाय)**

- मीरा का जन्म 1498 ई. मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम (वर्तमान ब्यावर) में हुआ ।
- मीरा का जन्म का नाम प्रेमल था, इन्हें राजस्थान की राधा भी कहा जाता हैं ।
- माता का नाम वीर कंवरी तथा पिता का नाम रतनसिंह (राठौड़ वंशी बाजोली के जागीरदार थे) ।

- शिक्षक व धार्मिक गुरू गजाधर थे तथा इनके पुस्तैनी गुरु चम्पा जी थे तथा इनके संत गुरु रैदास थे एवं आध्यात्मिक गुरू इनके दादाजी राव दूदा थे।
- मीरा का विवाह 1516 ई. में राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था । विवाह के कुछ समय बाद ही खातोली के युद्ध (1518 ई) में भोजराज की मृत्यु हो गयी थी ।
- भोजराज कर्मवती हाड़ी के पुत्र थे ।
- विक्रमादित्य द्वारा मीरा को भिन्न-भिन्न प्रकार की यातनाऐं दी गई । जिससे वे वृन्दावन चली गई थी।
- द्वारिका (गुजरात) रणछोड़ जी की मूर्ति में सन् 1540 में लीन हो गई ।
- इन्होनें सगुण भक्ति पर जोर दिया तथ भक्ति का मार्ग भजन, नृत्य व कृष्ण स्मरण को बताया ।
- इनकी प्रमुख रचनाऐं - नरसी जी को मायरो (मीरा जी के दिशा-निर्देशन में रतना खाती द्वारा रचित) गीतगोविन्द टीका, रुकमणी मंगल नरसी मेहता री हुण्ड़ी, पदावलियाँ आदि ।
- मीरा के दादा जी दूदा जी ने मीरा के लिए मेड़ता में आराध्य देव चारभुजा नाथ जी का मंदिर बनवाया व सांगा ने कुम्भश्याम मंदिर के पास कुंवरपदे महल बनवाया ।

❖ **संत गवरी बाई**

- गवरी बाई डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्ण भक्त कवयित्री थी ।
- इन्हें बांगड़ की मीरा कहा जाता है। जो कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार कर भक्ति करती थी ।
- डूंगरपुर के महाराज शिवसिंह ने इनके लिए बालमुकुंद मंदिर बनवाया ।

❖ **रामानन्दी सम्प्रदाय**

- यह वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।
- इसके प्रवर्तक रामानन्द जी थे।
- इनके गुरु रामानुज आचार्य थे ।
- इन्होंने उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति को प्रारंभ किया।
- कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा इनके शिष्य रहे हैं।
- इस सम्प्रदाय की प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं –

गलता जी

✓ यह इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ हैं।
✓ इसकी स्थापना कृष्णदास पयहारी के द्वारा की गई।
✓ पयहारी जी ने आमेर के शासक पृथ्वीराज की रानी बालाबाई के दीक्षागुरु थे।
✓ इन्होंने कापालिक सम्प्रदाय के योगी चतुरनाथ को शास्त्रार्थ में पराजित किया तथा गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की पीठ स्थापित की ।
✓ इसे जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह का समर्थन मिला।
✓ इन्होंने अपने कवि कृष्ण भट्ट के द्वारा रामरासा नामक ग्रंथ लिखवाया ।
✓ गलता जी (जयपुर) को मंकी बैली या उत्तर तोताद्री कहते है।

रैवासा

✓ इसकी स्थापना कृष्णदास के शिष्य अग्रदासजी ने सीकर के रैवास गाँव में की थी।
✓ यहाँ भगवान राम की भक्ति कृष्ण के समान मार्धुय भाव से की जाती हैं ।
✓ इसलिए अग्रदासजी के इस मत को रसिक सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता हैं ।

❖ **निम्बार्क सम्प्रदाय**

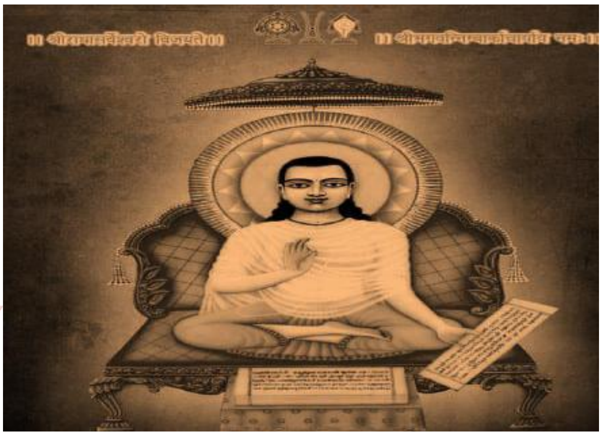

- इसे हंस सम्प्रदाय, सनकादिक सम्प्रदाय, नारद सम्प्रदाय भी कहा जाता हैं ।
- इसके संस्थापक निम्बार्कार्चाय जी थे । जो तेलंगाना में ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए ।
- इन्होंने वेदान्त परिजात ग्रंथ लिखा, जिसमें द्वैताद्वेत या भेदाभेद दर्शन का वर्णन हैं ।
- राधा - कृष्ण की युगल आराधना करना ।
- भारत में इसकी मुख्य पीठ वृन्दावन में स्थित हैं, राजस्थान में मुख्यपीठ अजमेर के किशनगढ़ के पास सलेमाबाद में स्थित हैं ।
- अन्य पीठे उदयपुर व जयपुर में भी हैं ।
- मारवाड़ में इसे नीमावत साध के नाम से जानते हैं।
- **सलेमाबाद पीठ की स्थापना** - परशुराम देवाचार्य जी द्वारा की गई । इन्होंने परशुराम सागर ग्रंथ लिखा । ये निम्बार्कार्चाय के शिष्य थे ।

❖ गौड़ीय सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदा के प्रवर्तक माधवाचार्य माने जाते हैं, इन्होने पूर्ण प्रज्ञ भाष्य नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें द्वैतवाद दर्शन प्रतिपादित किया ।
- यह सम्प्रदाय ब्रह्म सम्प्रदाय के नाम से जाने जाते थे, जिसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार गौड़ स्वामी ने किया था, इसलिए यह गौड़ीय सम्प्रदाय कहलाई ।
- इस सम्प्रदाय को चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण लीलाओं के माध्यम से जनजन तक पहुँचाया तथा बंगाल में वैष्णव वाद का जनक माना जाता हैं । इनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था ।
- चैतन्य प्रभू के शिष्य रूप गोस्वामी द्वारा राधा गोविन्द देवजी को राजस्थान में लाकर जयपुर के राजमहलों में प्रतिष्ठित किया गया ।
- जयपुर के महाराज मानसिंह इस सम्प्रदाय से बहुत प्रभावित थे, इन्होंने वृन्दावन में एक मंदिर का निर्माण करवाया तथा जयपुर में कनक घाटी में गोविन्द देव जी मूर्ति स्थापित कर कनक वृन्दावन नाम रखा । जिसे बाद में सवाई जयसिंह ने जयपुर में मंदिर बनवाकर वहाँ स्थापित करवा दिया । जो गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र हैं ।
- दूसरा केन्द्र मदनमोहन (करौली) है । इसका निर्माण गोपालसिंह ने 1748 ई. में करवाया ।
- इस सम्प्रदाय की एक शाखा सखी सम्प्रदाय के नाम से जानी जाती हैं, जिसकी स्थापना हरिदास जी ने की, जो कृष्ण को सखी मानकर पूजते थे ।

❖ वल्लभ सम्प्रदाय

- ❖ इसके प्रर्वतक वल्लभाचार्य थे ।
- ❖ इनका जन्म 1478 में बैशाख शुक्ल 11 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश)में हुआ ।
- ❖ इन्होंने अणुभाष्य नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें शुद्धाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया तथा वृन्दावन में श्रीनाथ मंदिर बनवाया था ।
- ❖ इनके पुत्र विठ्ठल नाथ ने अष्टछाप कवि मण्डल का निर्माण कर इस सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया।
- ❖ औरंगजेब ने 1669 ई. में हिन्दुओं के मंदिर तोड़ने का आदेश दिया तो विठ्ठल दास जी के वंशज गोस्वामी दामोदर जी व गोविन्द जी वृन्दावन से श्रीनाथ जी की प्रतिमा को लेकर राजस्थान आ गये तथा जोधपुर के चौपसनी गाँव पहुँचे ।
- ❖ यहाँ से 1672 ई. में इसे राजसिंह की अनुमति से राजसमंद लाया गया जिसे बनास नदी के तट पर सीहाड़ गांव में स्थापित किया तथा नाथद्वारा नाम रखा गया ।
- ❖ इस सम्प्रदाय में मंदिर को द्वारा कहा जाता हैं ।
- ❖ इसके मंदिर हवेलीनुमा होते हैं ।
- ❖ इनमें गाये जाने वाला गीत हवेली संगीत के नाम से जाना जाता हैं ।
- ❖ ईश्वर के दर्शन को झाँकी तथा ईश्वर की कृपा को पुष्टि कहा जाता हैं ।
- ❖ इसलिए यह पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय भी कहलाती हैं।
- ❖ इस सम्प्रदाय में कृष्ण के बाल स्वरूप की उपासना नानाविधि राजभोग और श्रृंगार की झांकियों के माध्यम से की जाती हैं ।

1. मथुरेश जी - कोटा
2. विठ्ठल नाथ जी – नाथद्वारा
3. द्वारकाधीश जी – कांकरोली
4. मदनमोहन जी - कामवन (डीग)
5. गोकुलचंद्र जी – कामवन
6. गोकुलनाथ जी - गोकुल (मथुरा)
7. बाल कृष्ण जी - सूरत (गुजरात)

❖ शैव सम्प्रदाय

- महाभारत काल में शैव पूजकों को माहेश्वर कहा जाता था ।
- राजस्थान में शैव धर्म सबसे प्राचीन माना गया हैं, जिसमें पाशुपत का वर्णन पुराणों में मिलता हैं ।
- इस सम्प्रदाय के चार भाग माने गये हैं ।

1. कापलिक सम्प्रदाय
2. पाशुपत सम्प्रदाय
3. कालामुख/काश्मीरक सम्प्रदाय (उत्तर भारत कश्मीर में विस्तार हुआ)
4. लिंगायत / वीर शैव सम्प्रदाय (यह दक्षिण भारत में प्रसारित रहा, जिसकी स्थापना बासव के द्वारा की गई)

➢ कापालिक सम्प्रदाय

- ✓ इस सम्प्रदाय के लोग भैरव को शंकर का अवतारी मानते हैं, जो मनुष्य के कपाल में भोजन करते हैं तथा शमसान की भस्म रमाते हैं ।
- ✓ ये तांत्रिक तथा अघोरी होते हैं तथा सुरापान (शराब) भी करते हैं ।
- ✓ यह चतुरनाथ से संबंधित सम्प्रदाय हैं ।

➢ लकुलीश (पाशुपत) सम्प्रदाय

- ✓ इसका प्रचार-प्रसार लकुलीश ने किया था ।
- ✓ इस मत के अनुयायी लकुलीश को शिव का 28वाँ अवतार मानते हैं ।
- ✓ हरित ऋषि इन्हीं के अनुयायी थे ।
- ✓ बप्पा रावल द्वारा निर्मित मेवाड़ के प्रमुख आराध्य देव एकलिंग नाथ जी (उदयपुर) का शिव मंदिर लकुलीश (पशुपति) सम्प्रदाय का प्रसिद्ध मंदिर हैं ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp – https://wa.link/c37ssj 1 web.– https://shorturl.at/mpOV7

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
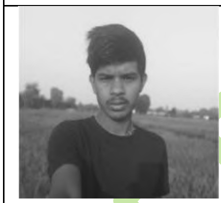	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh

FREE SAMPLE

N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner
	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur
	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village- gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil- mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
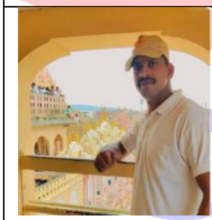	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUN U
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/c37ssj

Online order करें – https://shorturl.at/mpOV7

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO